

कृत्रिम बुद्धिमत्ता : असीम संभावनाओं के बीच नैतिकता का प्रश्न

डॉ० दीपमाला

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, डी० एस० कॉलेज, अलीगढ़, 202001

Email: deepmalamishra996@gmail.com.

Received: 17/10/2025 | Accepted: 25/11/2025 | Published: 30/12/2025

शोध सार

इक्कीसवीं सदी में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) मानव सभ्यता के लिए एक ऐसी युगांतरकारी क्रांति बनकर उभरी है जिसने विज्ञान-कथाओं को यथार्थ में बदल दिया है। प्रस्तुत शोध पत्र में एलन ट्यूरिंग के प्रारंभिक सिद्धांतों से लेकर वर्तमान मशीन लर्निंग और बिग डेटा तक की एआई की विकास यात्रा और समाज पर इसके प्रभावों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि जहाँ स्वास्थ्य, शिक्षा और उद्योग में एआई ने मानव क्षमताओं का अद्भुत विस्तार किया है, वहीं इसके अनियंत्रित विस्तार ने डीपफेक, निजता के हनन और पूर्वाग्रह जैसी गंभीर नैतिक चुनौतियां भी उत्पन्न की हैं। शोध का निष्कर्ष यह स्थापित करता है कि मशीनें डेटा का विश्लेषण तो कर सकती हैं, किंतु संवेदना और विवेक केवल मनुष्य के पास है। अतः भविष्य में 'रिस्पांसिबल एआई' की आवश्यकता है, जहाँ तकनीक का संचालन पूर्णतः मानवीय मूल्यों और नैतिकता के अधीन हो, ताकि यह मानवता के लिए संकट न बनकर एक सशक्त सहयोगी सिद्ध हो सके।

बीज शब्द : आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, एथिक्स, सॉफ्टवेयर, मानवता, रिस्पांसिबल।

प्रस्तावना

इक्कीसवीं सदी की भोर एक ऐसी तकनीकी क्रांति की साक्षी बन रही है, जिसकी कल्पना कुछ दशक पूर्व तक केवल विज्ञान-कथाओं तक सीमित थी। यह क्रांति है कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence - AI) की। यह केवल एक तकनीक नहीं, बल्कि एक ऐसी वैचारिक शक्ति है जो मशीनों को सोचने, सीखने, निर्णय लेने और मानव-जैसी संज्ञानात्मक क्रियाएं करने की क्षमता प्रदान करती है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता वर्तमान समाज के लिए संभावनाओं के असीम द्वार खोलती है यदि इनका नैतिकता पूर्ण प्रयोग किया जाए। लेकिन वर्तमान समय में सबसे बड़ा प्रश्न यही है इनका उपयोग नैतिकता के साथ कैसे हो।

AI की जड़ें 1950 के दशक में खोजी जा सकती हैं, जब एलन ट्यूरिंग जैसे दूरदर्शी विचारकों ने क्या मशीनें सोच सकती हैं? जैसा मौलिक प्रश्न उठाया। 1955 में एलन लेवल और हरबर्ट ए सिमोन ने गणितीय प्रमेयों को सिद्ध करने में सक्षम पहले एआई प्रोग्राम लॉजिक थियरेस्ट विकसित किया। 1956 में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस शब्द जॉन मेंकार्थी द्वारा हार्ट माउथ कार्यशाला के दौरान गढ़ा गया जिसे एक आधिकारिक शैक्षिक अनुशासन के रूप में एआई की शुरुआत को चिह्नित किया। LISP और FORTRAN जैसी उच्च स्तरीय प्रोग्रामिंग भाषाएं पेश की गईं जो एआई अनुसंधान के लिए उपकरण प्रदान करती हैं इस चरण में एआई के प्रति उत्साह बहुत अधिक था जिससे यह विश्वास पैदा हुआ कि निकट भविष्य में मानव स्तरीय एआई प्राप्त किया जा सकता है। इस अवधि ने एक अकादमी क्षेत्र के रूप में एआई की नींव रखी और मानव बुद्धि का अनुसरण करने वाली मशीन बनाने की क्षमता का पता लगाने के लिए शोधकर्ताओं को एक साथ लाया। इस दौरान उत्पन्न आशा और उत्साह ने एआई अनुसंधान और विकास में महत्वपूर्ण प्रगति के लिए आधार तैयार किया।

1956 में डार्टमाउथ वर्कशॉप में 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस' शब्द को पहली बार गढ़ा गया और यहीं से इसके औपचारिक अकादमिक सफर की शुरुआत हुई। “मूल रूप से एआई को मशीनों में मानव समान व्यवहार और कार्य क्षमता का अनुकरण करने के लिए डिजाइन किया गया है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) एक शब्द है जो दो अलग-अलग घटकों आर्टिफिशियल (कृत्रिम) और इंटेलिजेंस (बुद्धि) से बना है। ‘कृत्रिम’ मनुष्यों द्वारा बनाई गई किसी वस्तु को दर्शाता है और ‘बुद्धि’ संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं की क्षमता को संदर्भित करती है। परिणाम स्वरूप एआई को मानव निर्मित संज्ञानात्मक क्षमताओं के निर्माण के रूप में समझा जा सकता है।”¹ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एक बहु आयामी डोमेन है जिसमें कंप्यूटर में मानव जैसी बुद्धिमत्ता का अनुकरण और पुनरुत्पादन करने के उद्देश्य से विविध प्रकार की प्रौद्योगिकियों और पद्धतियों को शामिल किया जाता है। एआई सिस्टम के निर्माण और अनुप्रयोग को सुविधाजनक बनाने वाले मूलभूत तत्वों और सिद्धांतों को एआई के बिल्डिंग ब्लॉक्स के रूप में जाना जाता है इसमें से महत्वपूर्ण घटक हैं मशीन लर्निंग, डाटा एल्गोरिथम, एक्सपर्ट सिस्टम। मशीन लर्निंग एआई के क्षेत्र का एक मूलभूत घटक है जिसका उद्देश्य स्पष्ट प्रोग्रामिंग के बिना किसी कंप्यूटर या मशीन को उत्तर से प्राप्त ज्ञान के आधार पर निर्णय लेने की क्षमता के साथ सशक्त बनाना है। इस प्रक्रिया में ऐसे एल्गोरिथम का विकास किया जाता है जो डाटा का विश्लेषण करके उसके आधार पर निर्णय ले सके। इस एल्गोरिथम के द्वारा पैटर्न और विशिष्ट लक्षणों को पहचान कर उनका विश्लेषण करके विभिन्न वस्तुओं और स्थितियों को अलग करने में उनमें अंतर ज्ञात करने में सक्षम बनाते हैं यह सोशल मीडिया पर चेहरे की पहचान करने या पैदल चलने वालों या वाहनों के उपयोग में की जाती है। इस ऐप के प्रयोग के द्वारा अनुभवात्मक शिक्षा के माध्यम से मशीन की क्षमताओं का विकास करना होता है। डेटा को एआई की जीवन रेखा कहा जा सकता है। यह मशीन लर्निंग एल्गोरिथम की क्षमताओं को बढ़ावा देता है जिससे एआई सिस्टम उदाहरण और अनुभवों से प्रभावी रूप से सीख सकता है डेटा ए आई का मूलभूत स्तंभ है जिसके बिना एआई नहीं चल सकता। डाटा के ही आधार पर एआई अपनी सूचनाएं और निष्कर्षों प्रस्तुत करता है। यदि एआई को दिए गए निर्देश और सूचनाएं सही नहीं हैं तो निष्कर्ष और निर्णय भी सही नहीं होते हैं। इसलिए सत्य सूचनाओं के आधार पर ही एआई सही ढंग से कार्य कर सकता है।

एल्गोरिथम आई का एक प्रोग्रामिंग सिस्टम होता है जिसमें निर्देशों का एक समुच्चय है जो विशिष्ट कार्यों को करने के लिए एआई का मार्गदर्शन करते हैं। यह गणितीय और तार्किक प्रक्रियाएं निर्धारित करती हैं कि एआई डाटा को कैसे संसाधित करना है उसके आधार पर निर्णय लेना है और आउटपुट को किस रूप में प्रस्तुत करना है। एल्गोरिथम के विभिन्न प्रकारों में से सर्व एल्गोरिथम का काफी प्रयोग किया जाता है यह खोज इंजन की ही तरह से कार्य करता है तथा उन्हें बड़े पैमाने पर डाटा सेट से प्रमाणिक जानकारी को तुरंत प्राप्त करने में सक्षम बनाता है। संस्थाओं और व्यावसायिक इकाइयों में यह एल्गोरिथम सिस्टम को कार्य करने पूर्वानुमान लगाने और प्रक्रियाओं को स्वचालित करने में सक्षम बनाता है। एआई के कार्य निष्पादन में विशेषज्ञ प्रणालियों ऐसे अनुप्रयोग होती हैं जो विशिष्ट क्षेत्र जैसे चिकित्सा फाइनैस समस्या निदान जैसे प्रश्नों में मानव मस्तिष्क का ही अनुकरण करती है तथा निर्णय लेने और समस्याओं को हल करने के लिए ज्ञान के आधार पर अनुमान और नियमों के एक सेट का उपयोग करती हैं।

चिकित्सा क्षेत्र में विशेषज्ञ प्रणाली स्थापित चिकित्सा ज्ञान के आधार पर विभिन्न प्रकार की नैदानिक सिफारिश देती है जिससे रोगी के लक्षणों और चिकित्सा इतिहास का विश्लेषण करती है। इसी प्रकार वित्तीय क्षेत्र से भी संबंधित जानकारी में विशेषज्ञ प्रणालियों बाजार के रुझान ऐतिहासिक डेटा और जोखिम कार्यों का मूल्यांकन करते हुए निर्णय लेने में सहायता करती हैं।

इक्कीसवीं सदी में तीन शक्तियों के संगम—विशाल डेटा (Big Data) की उपलब्धता, अभूतपूर्व संगणना शक्ति (Computational Power), और उन्नत एल्गोरिदम (विशेषकर मशीन लर्निंग और डीप लर्निंग) - ने AI के विकास को तीव्र गति प्रदान की। बड़े डेटा और उच्च कम्प्यूटेशनल शक्ति के कारण, मशीन लर्निंग मॉडल और विशेष रूप से डीप लर्निंग मॉडल ने पिछले एक दशक में व्यापक सफलता प्राप्त की है। आज यह हमारे जीवन में इस कदर व्याप्त हो चुका है कि हम अनजाने में ही दिन में सैकड़ों बार इसका उपयोग करते हैं। यह एक मौन क्रांति है, जो धीरे-धीरे हमारे समाज के ताने-बाने को पुनः परिभाषित कर रही है।

AI का सबसे बड़ा योगदान मानव क्षमताओं का विस्तार करने और उन समस्याओं को हल करने में है जो हमारी जैविक सीमाओं से परे थीं। विभिन्न क्षेत्रों में इसकी उपलब्धियां किसी चमत्कार से कम नहीं हैं।

स्वास्थ्य सेवा: जीवन की रक्षा का संकल्प

स्वास्थ्य के क्षेत्र में AI एक देवदूत बनकर उभरा है। यह डॉक्टरों और शोधकर्ताओं के लिए एक शक्तिशाली सहायक सिद्ध हो रहा है।

रोग निदान: AI-पावर्ड इमेजिंग टूल, जैसे कि MRI और CT स्कैन का विश्लेषण, मानव आंखों से भी अधिक सटीकता से कैंसरग्रस्त कोशिकाओं या अन्य विसंगतियों का पता लगा सकते हैं। इससे रोगों का प्रारंभिक अवस्था में ही निदान संभव हो पाता है, जिससे लाखों जीवन बचाने की संभावना बढ़ी है।

दवा निर्माण: नई दवाओं की खोज एक लंबी और महंगी प्रक्रिया है। AI एल्गोरिदम खरबों आणविक संरचनाओं का विश्लेषण करके कुछ ही दिनों में संभावित दवा के यौगिकों की पहचान कर सकते हैं, जिसमें पारंपरिक रूप से दशकों लग जाते थे।

व्यक्तिगत उपचार: "एआई मरीज के जेनेटिक डेटा, जीवन शैली और मेडिकल इतिहास का विश्लेषण करके व्यक्तिगत उपचार योजनाएं बनाने में मदद करता है, जिससे इलाज अधिक प्रभावी और सटीक होता है।"²

शिक्षा का कायाकल्प: ज्ञान का लोकतंत्रीकरण

AI शिक्षा के पारंपरिक मॉडल को बदलकर हर छात्र के लिए व्यक्तिगत और सुलभ बना रहा है।

अनुकूलित शिक्षण: AI-आधारित प्लेटफॉर्म प्रत्येक छात्र की सीखने की गति, उसकी शक्तियों और कमजोरियों को समझकर उसके लिए एक अनुकूलित शिक्षण पथ तैयार करते हैं। यह सुनिश्चित करता है कि कोई भी छात्र पीछे न छूटे।

स्वचालित मूल्यांकन: शिक्षकों के प्रशासनिक बोझ को कम करते हुए, एआई उत्तर पुस्तिकाओं और असाइनमेंट का मूल्यांकन कर सकता है, जिससे शिक्षक छात्रों पर व्यक्तिगत ध्यान देने के लिए अधिक समय पाते हैं।

भाषा की बाधाओं को तोड़ना : रियल-टाइम ट्रांसलेशन टूल दुनिया भर के छात्रों को किसी भी भाषा में उपलब्ध सर्वोत्तम शैक्षिक सामग्री तक पहुंचने में सक्षम बनाते हैं, जिससे ज्ञान का सच्चा लोकतंत्रीकरण हो रहा है।

उद्योग और अर्थव्यवस्था : दक्षता की नई परिभाषा

व्यापार और उद्योग जगत में AI उत्पादकता, दक्षता और नवाचार को नई ऊंचाइयों पर ले जा रहा है।

स्वचालन (Automation) : 'विनिर्माण संयंत्रों में रोबोट से लेकर ग्राहक सेवा में चैटबॉट तक, एआई दोहराए जाने वाले और श्रम-साध्य कार्यों को स्वचालित कर रहा है, जिससे मानव कर्मचारी अधिक रचनात्मक और रणनीतिक कार्यों पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं।'

आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन : AI मांग का पूर्वानुमान लगाने, इन्वेंट्री को अनुकूलित करने और लॉजिस्टिक्स को सुव्यवस्थित करने में मदद करता है, जिससे लागत कम होती है और बर्बादी घटती है।

वित्तीय सुरक्षा : बैंकिंग क्षेत्र में AI धोखाधड़ी वाले लेनदेन का तुरंत पता लगाने और साइबर हमलों को रोकने के लिए अरबों डेटा बिंदुओं का रियल-टाइम में विश्लेषण करता है।

हमारी रोज़मर्रा की ज़िंदगी AI के अदृश्य धागों से बुनी हुई है। स्मार्टफोन के वॉयस असिस्टेंट (सिरी, गूगल असिस्टेंट) से लेकर अमेज़न और नेटफ्लिक्स की सिफारिशों तक, गूगल मैप्स के रियल-टाइम ट्रैफिक अपडेट से लेकर सोशल मीडिया फीड के वैयक्तिकरण तक, AI हमारे अनुभव को अधिक सहज और सुविधाजनक बना रहा है। यह सब तो कृत्रिम बुद्धिमत्ता के सकारात्मक प्रभाव है जिनसे हम विकसित देशों की श्रेणी में आ सकते हैं तथा हमारे जीवन शैली विकसित और सुविधाजनक हुई है। यहां कृत्रिम बुद्धिमत्ता में संभावनाओं के साथ-साथ बहुत सारी नैतिक और मानवीय चुनौतियां भी हैं जिनका समाधान ढूंढना हमारे लिए बहुत आवश्यक है।:

प्रौद्योगिकी का मूल्य उसके उपयोग में निहित है। AI की अपार शक्ति जब गलत हाथों में पड़ती है या बिना नैतिक दिशा-निर्देशों के विकसित होती है, तो यह विनाशकारी परिणाम दे सकती है। आज मानवता इसी दोराहे पर खड़ी है।

डीपफेक और सूचना का विरूपण : यह AI के दुरुपयोग का सबसे भयावह और प्रत्यक्ष उदाहरण है। डीपफेक तकनीक का उपयोग करके किसी भी व्यक्ति का चेहरा और आवाज का इतनी सटीकता से अनुकरण किया जा सकता है कि असली और नकली में भेद करना लगभग असंभव हो जाता है। सोशल मीडिया के माध्यम से डीपफेक वीडियो और फोटोशॉप की गई तस्वीरों का उपयोग करके झूठी खबरें (Fake News) और दुष्प्रचार फैलाया जा सकता है।

व्यक्तिगत हमले: किसी की छवि को विकृत कर आपत्तिजनक वीडियो बनाना, ब्लैकमेलिंग करना या सामाजिक प्रतिष्ठा को धूमिल करने वाले अनैतिक आचरण भी देखे जा सकते हैं।

सामाजिक और राजनीतिक अस्थिरता: यह दंगे भड़काने, चुनावों को प्रभावित करने और लोकतांत्रिक संस्थाओं में जनता के विश्वास को खत्म करने का एक शक्तिशाली हथियार बन सकता है।

पूर्वाग्रह और भेदभाव का डिजिटल संस्करण

AI सिस्टम उतने ही निष्पक्ष होते हैं, जितना कि उन्हें प्रशिक्षित करने वाला डेटा। यदि ऐतिहासिक डेटा में सामाजिक पूर्वाग्रह (जैसे जाति, लिंग, या नस्ल के आधार पर भेदभाव) मौजूद हैं, तो AI न केवल उन पूर्वाग्रहों को सीखता है, बल्कि उन्हें और भी बढ़ा देता है।

न्यायिक प्रणाली में अन्याय : आपराधिक न्याय प्रणाली में उपयोग किए जाने वाले एआई उपकरण ऐतिहासिक डेटा के आधार पर कुछ समुदायों के लोगों को अधिक जोखिम वाला मान सकते हैं, जिससे उनकी जमानत या पैरोल की अर्जी खारिज होने की संभावना बढ़ जाती है।

नौकरियों में भेदभाव : यदि किसी कंपनी का भर्ती करने वाला AI एल्गोरिदम अतीत के डेटा पर प्रशिक्षित है, जहां मुख्य रूप से पुरुषों को काम पर रखा गया था, तो वह भविष्य में भी पुरुष उम्मीदवारों को प्राथमिकता दे सकता है।

AI को कार्य करने के लिए भारी मात्रा में डेटा की आवश्यकता होती है। हमारी हर ऑनलाइन गतिविधि, हमारी पसंद-नापसंद, हमारी लोकेशन, यहां तक कि हमारी बातचीत भी डेटा के रूप में संग्रहीत की जा रही है। एआई बड़े पैमाने पर निगरानी (Mass Surveillance) को जन्म देता है और हमारी गोपनीयता को गंभीर रूप से खतरे में डालता है। यह डेटा विज्ञापन कंपनियों से लेकर सत्तावादी सरकारों तक, किसी के भी हाथ लग सकता है।

रोजगार का विस्थापन और आर्थिक असमानता-

स्वचालन का एक स्वाभाविक विशेष रूप से वे नौकरियां जिनमें दोहराव वाले कार्य शामिल हैं (जैसे डेटा एंट्री, असेंबली लाइन वर्क, ड्राइविंग), एआई द्वारा प्रतिस्थापित किए जाने के उच्च जोखिम में हैं। यदि हमने इस संक्रमण को सही ढंग से प्रबंधित नहीं किया, तो यह बड़े पैमाने पर बेरोजगारी और समाज में आर्थिक असमानता को और गहरा कर सकता है।

इन चुनौतियों का अर्थ यह नहीं है कि हम AI के विकास को रोक दें, बल्कि यह है कि हम इसे सही दिशा में निर्देशित करें। समाधान एक बहु-आयामी दृष्टिकोण की मांग करता है।

तकनीकी समाधान और जवाबदेही : सॉफ्टवेयर बनाने वाली कंपनियों की यह नैतिक जिम्मेदारी है कि वे सुरक्षा उपायों को अपनी तकनीक में शामिल करें और रिस्पॉसिबल एआई को परिभाषित करें। “रिस्पॉसिबल एआई एक ऐसा ढांचा है जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता के विकास और इसके अनुप्रयोगों को इस तरह से निर्देशित करता है कि वह नैतिक मूल्यों के साथ संरक्षित हो, मानवाधिकारों का सम्मान करें और जोखिमों और संभावित नुकसानों को कम करते हुए सामाजिक लाभ को अधिकतम करता हो।”³

सत्यापन और पहचान (Verification and Identity) : शक्तिशाली एआई टूल, विशेष रूप से जेनरेटिव एआई, का उपयोग करने से पहले एक मजबूत पहचान सत्यापन प्रक्रिया अनिवार्य की जानी चाहिए। इससे यह पता लगाया जा सकेगा कि तकनीक का उपयोग कौन कर रहा है और दुरुपयोग की स्थिति में जवाबदेही तय की जा सकेगी।

डिजिटल वॉटरमार्किंग : AI द्वारा उत्पन्न सामग्री (चाहे वह छवि हो, वीडियो हो या टेक्स्ट) में एक अदृश्य डिजिटल वॉटरमार्क डाला जा सकता है। इससे यह प्रमाणित करना आसान हो जाएगा कि सामग्री कृत्रिम रूप से बनाई गई है, जिससे डीपफेक और गलत सूचनाओं के प्रसार को रोकने में मदद मिलेगी।

नियामक और नीतिगत ढांचा : सरकारों और अंतरराष्ट्रीय निकायों को AI के विकास और उपयोग के लिए स्पष्ट कानून और नैतिक दिशानिर्देश बनाने होंगे। ये नियम डेटा गोपनीयता की रक्षा, एल्गोरिदम में पारदर्शिता सुनिश्चित करने और पूर्वाग्रह को रोकने पर केंद्रित होने चाहिए।

नैतिक शिक्षा और सार्वजनिक जागरूकता: सबसे शक्तिशाली समाधान शिक्षा में निहित है। ‘हमें स्कूलों, कॉलेजों और कार्यस्थलों पर एआई के नैतिक निहितार्थों के बारे में संवाद शुरू करना होगा।’ इसके लिए रिस्पॉसिबल एआई के साथ-साथ एथिकल एआई के सिद्धांत को भी प्रयोग में व्यावहारिक रूप से लाना होगा। “एथिकल एआई दरअसल नैतिक दर्शन में निहित है जिसमें व्यक्तिगत अधिकार, गोपनीयता, गैर-भेदभाव और पारदर्शिता जैसे सिद्धांत और मूल्य शामिल हैं।”⁴ सरल शब्दों में, आम जनता को डिजिटल साक्षरता और आलोचनात्मक सोच के लिए प्रशिक्षित करना होगा ताकि वे वास्तविक और नकली सामग्री के बीच अंतर कर सकें।

भविष्य के निर्माता हम स्वयं हैं कृत्रिम बुद्धिमत्ता मानवता के इतिहास में एक निर्णायक मोड़ है। यह अग्नि की खोज या औद्योगिक क्रांति से कम महत्वपूर्ण नहीं है। यह एक दर्पण है, जो हमारी अपनी बुद्धिमत्ता, हमारी महत्वाकांक्षाओं और हमारे नैतिक विवेक को दर्शाता है। इसने हमें बीमारियों को हराने, ज्ञान की सीमाओं को पार करने और एक अधिक समृद्ध दुनिया बनाने के अभूतपूर्व अवसर दिए हैं। लेकिन साथ ही, इसने हमें विभाजन, धोखे और अन्याय के नए उपकरण भी थमा दिए हैं।

AI का भविष्य इस बात पर निर्भर नहीं करेगा कि मशीनें कितनी 'बुद्धिमान' हो जाती हैं, बल्कि इस बात पर कि हम मनुष्य कितने 'बुद्धिमान' और संवेदनशील बने रहते हैं। चुनौती प्रौद्योगिकी के विकास को रोकने की नहीं, बल्कि उसे मानवता के शाश्वत मूल्यों—करुणा, न्याय, सत्य और समानता—के साथ एआई संचालित मशीनों और उनके प्रभाव के अर्थ को मनुष्य के सोचने और कार्य करने के संदर्भ में जानना और समझना बहुत आवश्यक है क्योंकि यदि एआई का सही ढंग से उपयोग किया जाए तो यह मनुष्य की जीवन में हर क्षेत्र में उसके सहायक के रूप में कार्य करती है। एआई एक मशीन है वह प्राप्त डाटा के आधार पर दुख का विश्लेषण कर सकती है लेकिन वह दुख का अनुभव नहीं कर सकती है। वह ज्ञान तो दे सकती है लेकिन विवेक नहीं दे सकती। वह कार्य कर सकती है लेकिन कार्य उचित है या अनुचित है यह सोचने की क्षमता एआई में नहीं है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता की अवधारणा का प्रयोग मानव हितों की पूर्ति के साथ-साथ समुचित तकनीकी विकास के लिए किया जा सकता है। यह मनुष्य के विकास की नई श्रृंखला में सार्थक सहभागी बन सकती है। उन्हें निर्णय लेने में सहयोग प्रदान कर सकती है। इस दृष्टिकोण को अपनाते हुए उद्यमी और संस्थाएं अपने कार्य बल का विस्तार कर सकते हैं। एआई की वैकल्पिक संकल्पना मानवीय भावनाओं और तार्किक बुद्धि के साथ मनुष्य को सशक्त बनाने की बात करती हैं। यह मनुष्यों को प्रतिस्थापित करने के बजाय उनकी क्षमताओं को बढ़ाने में सहायक के रूप में जानी जा सकती है तथा यह मनुष्य के निर्देशन पर ही कार्य करती है इसलिए यह आवश्यक है कि मनुष्य में इतनी नैतिकता हो कि वह इस मशीन का उपयोग समाज के कल्याण और मानवता के हितों के लिए ही करें इसका दुरुपयोग ना करें अन्यथा जो एआई मनुष्य के लिए वरदान है वही मानवता के लिए अभिशाप भी बन सकती है। यह नैतिक विवेक मनुष्य में स्वयं ही रखना होगा तथा एआई की नैतिकता की जिम्मेदारी भी मनुष्य के ही ऊपर है।

वह जैसा निर्देश देगा वैसे ही यह कार्य करती है।

अतः इसे कोई ऐसा निर्देश न दिया जाए जिससे मानवता शर्मसार हो जो मानवता के लिए घातक हो। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि AI का विकास केवल कुछ लोगों के लाभ के लिए नहीं, बल्कि पूरी मानवता की भलाई के लिए हो। यदि हम विवेक और दूरदर्शिता के साथ इस मार्ग पर आगे बढ़ते हैं, तो कृत्रिम बुद्धिमत्ता वास्तव में एक ऐसे उज्ज्वल भविष्य का निर्माण कर सकती है, जिसकी हमने केवल कल्पना ही की है। यह यात्रा जटिल है, लेकिन विकल्प हमारे ही हाथों में है।

निष्कर्षतः

हम कह सकते हैं कृत्रिम बुद्धिमत्ता मानव सभ्यता के इतिहास में केवल एक तकनीकी आविष्कार नहीं, बल्कि एक निर्णायक युग है। इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि मशीनें गणनाओं और विश्लेषण में भले ही मनुष्य से तीव्र हों, किंतु 'संवेदना', 'सृजनात्मकता' और 'नैतिक विवेक' का स्थान कोई भी एल्गोरिद्म नहीं ले सकता। तकनीक की सार्थकता उसके मानवीय नियंत्रण में ही निहित है। अतः, भविष्य की चुनौती एआई के विकास को रोकने की नहीं, बल्कि उसे मानवीय मूल्यों के अनुरूप ढालने की है। यदि हम अपने विवेक और नैतिकता के साथ इस शक्ति का संचालन करते हैं, तो कृत्रिम बुद्धिमत्ता निश्चित रूप से मानवता के उत्कर्ष में एक सशक्त सहभागी और वरदान सिद्ध होगी।

संदर्भ सूची -

- [1]. आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस : एक अध्ययन, डॉ० सुनील कुमार शर्मा, वाणी प्रकाशन, संस्करण - 2025, पृ० सं०- 16.
- [2]. वहीं, पृ० सं० - 123-124.
- [3]. वहीं, पृ० सं० - 124.
- [4]. वहीं।

Cite this Article:

दीपमाला. (2025). कृत्रिम बुद्धिमत्ता: असीम संभावनाओं के बीच नैतिकता का प्रश्न. *Chaitanya Samvad Interdisciplinary Journal of Research*, 1(3), 39-43.

Doi: <https://doi.org/10.65250/chaitanyasamvad.v1i3.5>

Journal URL: <https://chaitanyasamvad.com/>



This work is licensed under a [Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License](https://creativecommons.org/licenses/by-nc/4.0/)